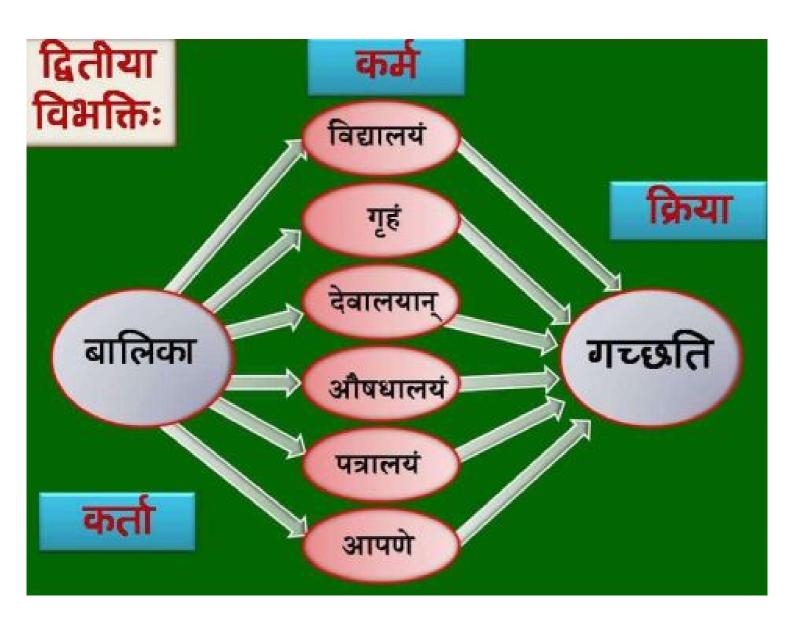


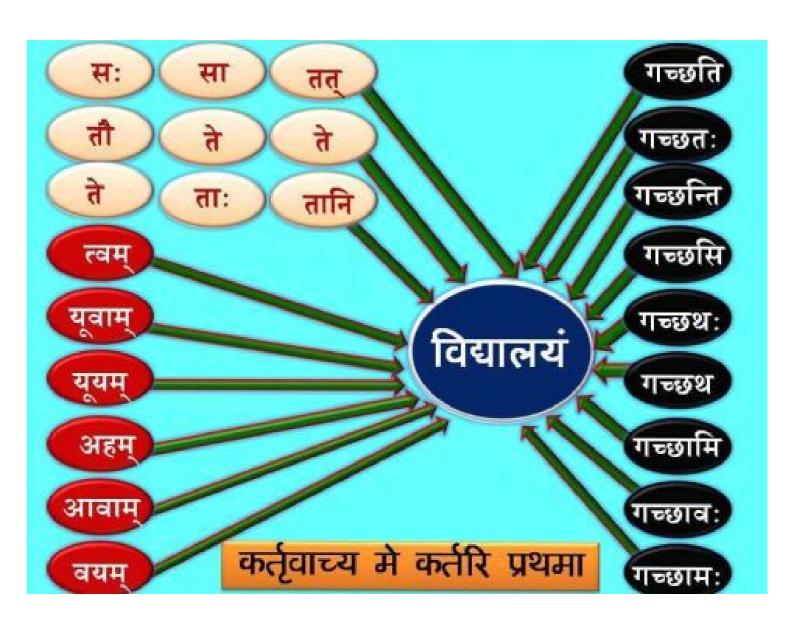


रामः ग्रामं गच्छति। कर्ता में (कर्तृवाच्ये) बालकौ पुस्तकं पठतः । बालकाः पुस्तकं पठन्ति । कुम्भकारेण घटः क्रियते । रामेण पुस्तकानि पठ्यन्ते । कुम्भकारेण घटाः क्रियन्ते । कर्म में (कर्मवाच्ये) रामेण भूयते । रामाभ्यां भूयते । भाववाच्य मे बालकैः हस्यते । हे राम! हे सीते! हे बालकाः! सम्बोधन में

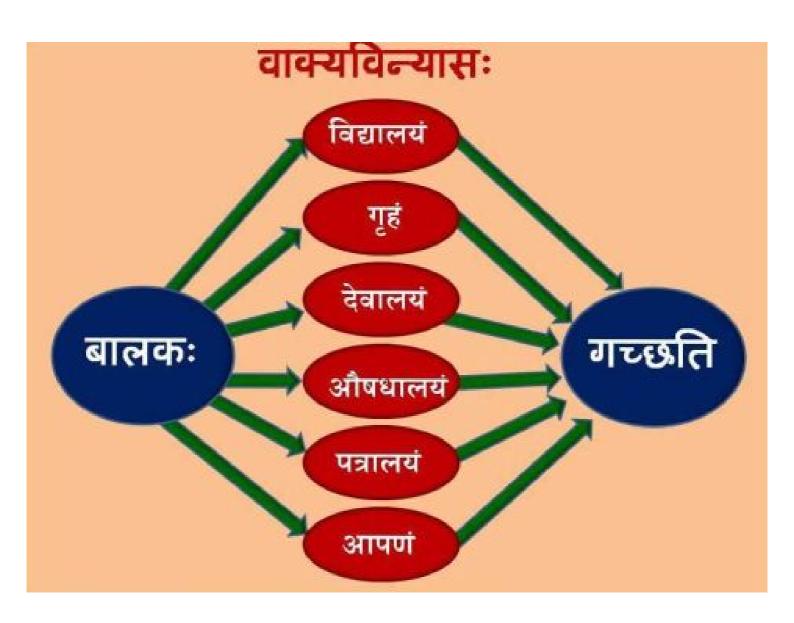
| | कर्तामे (कर्मबाच्ये) | रामेण ग्रामः गम्यते | | करण कारक में | रामः वाणेन रावणं इन्ति |
|---|-------------------------|---------------------------------|---|-------------------------|---|
| | प्रकृति के अर्थ में | दुन्धं प्रकृत्या मधुरं भवति | | मार्गपरिमाण के अर्थ में | क्रोषेण पुस्तकं पडति |
| | सदृशः के योग में | सः दाने कर्णेन सदृशः अस्ति | | समयवाचकशब्द में | मासेन व्याकरम् अधीतम् |
| | समानः के योग में | धर्मेण द्वीतः पशुषिः समानः | | अङ्गविकार में | पादेन सञ्बः |
| | कृतम् के योग में | कृतम् आलस्येन | | प्रयोजन के योग में | धनेन कि प्रयोदनम् |
| | समः के योग में | मोइनः भाग सदृशः अस्ति | | लक्षणवाचक शब्द में | सः जटाभिः तापसः प्रतीवते |
| | सार्धम् के योग में | सः मथा सार्चं पठित | 4 | मृल्यबाचक शब्द में | सः शतेन घेनुं क्रीसवान् |
| | साकम् शब्द के योग में | वत्सः ग्रेन्या साकं वनं गच्छति | | हेतुवाचक शब्द में | सः अध्ययनेन अत्रागन्छति |
| | सह के योग में | सीता रामेण सह वनगगन्छत् | C | ऊनः शब्द के योग में | इदं स्वर्णकुणडलं माषेण ऊनमस्ति |
| | लाभः शब्द के योग में | बिमरेण गीरोन कः लाभः | | होनः शब्द के योग में | धर्मेण झैनः जनः पशुतुल्यः भवति |
| 4 | अर्थः शब्द के योग में | निरक्षोण पुरुषेण कः अर्थः | | न्यूनः शब्द के योग में | स्वतक्षण्डमिदं गामेण किल्यत् न्यूमास्ति |
| | | | | शृन्यः शब्द के योग में | स्वाचिमानेन सून्तः नर मृतः एव भवति |
| 9 | गुण: शब्द के योग में | मूर्खेण पुत्रेण कः गुणः | 4 | रहित: शब्द के योग में | लोपेन रहितः सुखं लपते |
| | कार्यम् शब्द के योग में | धनिकानां निर्धनैः कार्यं न भवति | 4 | अल शब्द के योग में | अलं विवादेन |
| | किम् शब्द के योग में | कलहेन किम् | | भाववाच्य में कर्ता में | रामेण इस्वते |







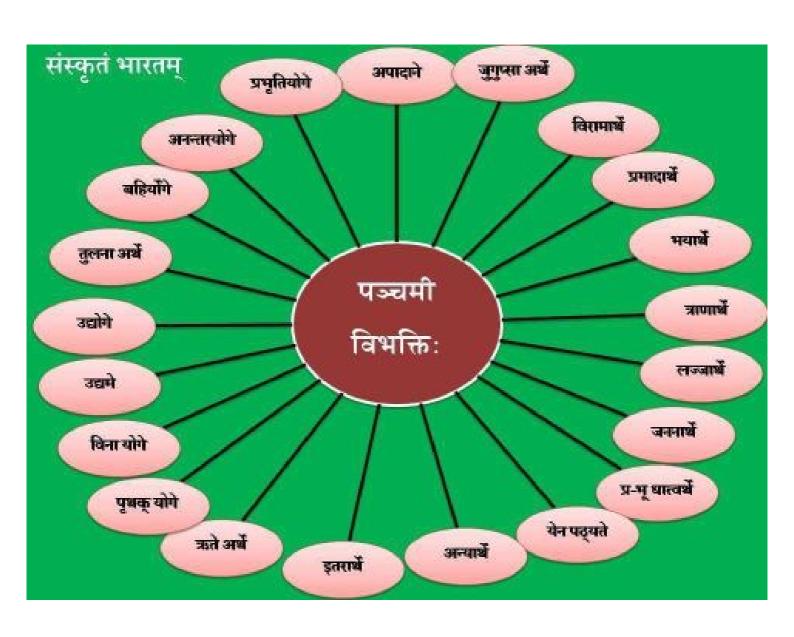












| मकः पापात् जुगुप्सते | लज्जार्षे | वधुः श्रमुरात् लज्जते |
|------------------------------------|------------------|------------------------------|
| सोमवासरात् अनन्तरमागमिष्यामि | जननार्थे | ब्रह्मणः प्रजाः जायन्ते |
| नगरात् बहिः रमणीयमुद्यानमस्ति | प्र-भू घात्वर्थे | गंगा हिमालयात् प्रभवति |
| रामः श्यामात् पटुतरः अस्ति | येन पठ्यते | छात्रः अध्यापकात् अधीते |
| उद्योगात् नरः सर्वं प्राप्तुमर्हति | अन्यार्थे | ईश्वरात् अन्यः कः रक्षकः |
| उद्यमात् विना धनं न लभते | मयार्थे | बालकः कुक्कुरात् विभेति |
| ज्ञानात् विना न मुक्तिः | प्रमादार्थे | स्वाध्यायात् मा प्रमदितव्यम् |



